कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

"Registered" Postal Regn. No.MP/Bhopal/4-150/2023-25 RNI No.-CHHHIN/2002/10910, डाक प्रेषण का दिन - मंगलवार, बुधवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 रायपुर, प्रकाशन - सोमवार 20 अक्टूबर 2025 वर्ष-24 अंक - 7 मूल्य रु. 12/- कुल पृष्ठ - 12 www.krishakjagat.org पृष्ठ -1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

3

फॉस्फेट समृद्ध जैविक खाद (प्रोम) का उत्पादन एवं प्रयोग

4

दीपावली का महत्व

लघु वनोपजों से आत्मनिर्भरता की राह : श्री साय

मुख्यमंत्री ने तय किया हरित विकास का रोडमैप

राज्य में वन धन केंद्रों की संख्या बढ़ाने की आवश्यकता

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय की अध्यक्षता में मंत्रालय (महानदी भवन) में आयोजित कलेक्टर-डीएफओ संयुक्त कॉन्फ्रेंस में प्रदेश के वन प्रबंधन, तेंदूपत्ता संग्राहकों के हित, लघु वनोपजों के मूल्य संवर्द्धन (वैल्यू एडिशन), ईको-टूरिज्म, औषधीय पौधों की खेती और वनों से जुड़ी आजीविका के विविध आयामों पर विस्तृत चर्चा हुई। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने कहा कि तेंदूपत्ता संग्राहक हितग्राहियों की संख्या आज 12 लाख से अधिक हो चुकी है, जो हमारे सामूहिक प्रयासों की सफलता का प्रमाण है। उन्होंने कहा कि इस उपलब्धि के लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि अब आवश्यकता इस बात की है कि हम वन उपज का अधिकतम वैल्यू एडिशन करें। उन्होंने कहा कि राज्य में वन धन केंद्रों की संख्या बढ़ाने की जरूरत है, ताकि ग्रामीणों को अधिक आय के साधन मिल सकें और वे आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ें।

कॉन्फ्रेंस में जिला अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि तेंदूपत्ता संग्राहकों को भुगतान सात से पंद्रह दिनों के भीतर सुनिश्चित किया जाए। साथ ही भुगतान की जानकारी एसएमएस के माध्यम से सीधे संग्राहकों के मोबाइल पर भेजी जाए, जिससे पारदर्शिता बनी रहे। बैठक में बताया गया कि लगभग 15 लाख 60 हजार संग्राहकों की जानकारी ऑनलाइन दर्ज हो चुकी है और सभी भुगतान बैंक खातों के माध्यम से किए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने तेंदूपत्ता संग्रहण प्रक्रिया के पूर्ण कंप्यूटरीकरण की पहल को और तेज करने के निर्देश दिए।

औषधीय पौधों की खेती के विस्तार की नई पहल

बैठक में औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देने के लिए विशेष योजना तैयार करने के निर्देश दिए गए। धमतरी, मुंगेली और गौरेला-पेंड्रा-मरवाही (जीपीएम) जिलों में औषधीय पौधों की खेती से संबंधित विषयों पर उपस्थित डीएफओ को विस्तृत जानकारी दी गई बैठक में बताया गया कि औषधीय पौधों की खेती न केवल लोगों की आजीविका बढ़ाने में सहायक होगी, बल्कि पारंपरिक उपचार पद्धतियों के ज्ञान को भी आगे बढ़ाएगी। औषधीय पादप बोर्ड के मुख्य कार्यपालन अधिकारी (सीईओ) ने इस क्षेत्र में उपलब्ध संभावनाओं और लोगों की आय में वृद्धि के अवसरों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की। छत्तीसगढ़ हर्बल और संजीवनी ब्रांड के उत्पादों के प्रचार-प्रसार पर विशेष बल दिया गया। बैठक में निर्देश दिए गए कि इन उत्पादों की बिक्री ग्रामीण और शहरी दोनों बाजारों में बढ़ाई जाए, ताकि स्थानीय उत्पादों के लिए एक मजबूत मार्केट नेटवर्क विकसित हो सके। साथ ही, उत्पादों के जैविक प्रमाणीकरण (Organic Certification) की प्रक्रिया को शीघ्रता से पूरा करने पर बल दिया गया।

वन मंत्री श्री कश्यप ने कहा कि बस्तर और सरगुजा संभागों में विशेष रूप से ईको-टूरिज्म को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसे आजीविका से जोड़ने के लिए ठोस रणनीति बनाने की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार अब 75 प्रकार की लघु वनोपजों की खरीदी करने जा रही है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई मजबूती मिलेगी।

इस अवसर पर सभी संभागायुक्त, जिला कलेक्टर एवं वन मंडलाधिकारी उपस्थित थे।

कृषि क्षेत्र में नई क्रांति की ओर

'दलहन मिशन' - 'धन-धान्य कृषि योजना' का समय से क्रियान्वयन होगा : श्री शिवराज

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने हाल ही में 'दलहन आत्मनिर्भरता मिशन' और 'प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना' से संबंधित एक उच्चस्तरीय बैठक का आयोजन किया। इस बैठक में मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ इन दोनों महत्वाकांक्षी योजनाओं के समयबद्ध और प्रभावी क्रियान्वयन पर विशेष चर्चा की गई। श्री चौहान ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना के त्वरित क्रियान्वयन के लिए 11 मंत्रालयों के मंत्रियों और नीति आयोग के अधिकारियों के साथ जल्द ही बैठक की जाए, ताकि योजना का समन्वित लाभ किसानों तक पहुँच सके।

दलहन आत्मनिर्भरता मिशन पर ज़िलेवार क्लस्टर मॉडल

बैठक में बताया गया कि 'दलहन आत्मनिर्भरता मिशन को जिलेवार क्लस्टर बनाकर लागू किया जाएगा, जिसके लिए राज्यों से सक्रिय सहयोग लिया जा रहा है। श्री चौहान ने राज्यों के 'नोडल अधिकारियों के साथ जल्द बैठक आयोजित' करने के भी निर्देश दिए हैं, ताकि इस मिशन को जमीनी स्तर पर सफलता के साथ लागू किया जा सके।

प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना: 100 आकांक्षी जिलों पर फोकस

प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना को प्रधानमंत्री ने गत 11 अक्टूबर 2025 को दिल्ली के पूसा में आयोजित कार्यक्रम में लॉन्च किया था। यह योजना देश के 100 आकांक्षी जिलों में कृषि उत्थान के लिए 11 मंत्रालयों की 36 उप-योजनाओं को समन्वित करती है। इस योजना का उद्देश्य कृषि क्षेत्र में समग्र विकास, उत्पादकता में वृद्धि, और किसानों की आमदनी में सुधार करना है।

वित्तीय परिव्यय और लक्ष्य

प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना को वर्ष 2025-26 से छह वर्षों के लिए लागू किया गया है, जिसका वार्षिक परिव्यय रू. 24,000 करोड़ निर्धारित किया गया है।

वहीं, 'दलहन आत्मनिर्भरता मिशन' के लिए रू. 11,440 करोड़ की राशि स्वीकृत की गई है, जिसका लक्ष्य वर्ष 2030-31 तक -

- दलहन क्षेत्रफल को 275 लाख हेक्टेयर से बढ़ाकर 310 लाख हेक्टेयर करना।
- दलहन उत्पादन को 242 लाख टन से बढ़ाकर 350 लाख टन तक ले जाना।
- उत्पादकता को 1130 किग्रा/हेक्टेयर तक पहुँचाना है।

इन पहलों के तहत दलहन उत्पादकता बढ़ने के साथ-साथ बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन की भी संभावना है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी।

कृषक जगत के सुधी पाठकों को जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि. की ओर से दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं। इस अंक के साथ लक्ष्मीजी का आकर्षक पाना सप्रेम भेंट।

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

आलस्य आपके लिये मृत्यु है और केवल उद्योग ही आपका जीवन है। - स्वामी रामतीर्थ

खुशहाली, समृद्धि का पर्व दीपावली

भारतीय संस्कृति यहां के पर्व-त्यौहारों से ओत-प्रोत है। प्रायः हर माह में कोई ना कोई तीज-त्यौहार मनाने की परम्परा पीढ़ी दर पीढ़ी से चली आ रही है जो पिता-पुत्र, सास-बहू को स्वाभाविक रूप से हस्तान्तरित होती जाती है। पौराणिक हिसाब से कार्तिक माह की अमावस्या को दीपावली, दिवाली, दीपमालिका इत्यादि नामों से जानी जाने वाली दिवाली प्रायः सभी वर्ग गरीब हो या मध्यम अथवा धन कुबेर सभी दिवाली का पर्व धूमधाम से मनाते हैं। कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक और गुजरात से लेकर आसाम तक विभिन्न त्यौहारों को मनाने की परम्परा है परंतु दिवाली एक ऐसा त्यौहार है जिसे भारत के हर कोने तक मनाया जाता है। जैसा कि हर त्यौहार, तीज मनाने के पीछे कुछ ना कुछ पौराणिक तथ्य होते हैं। दिवाली मनाने के भी कुछ कारण हैं जिसमें त्रेतायुग की यह मान्यता आज भी प्रचलित है कि अयोध्या के राजा दशरथ द्वारा अपने पुत्र राम को चौदह वर्षों के लिये वनवास जाने का आदेश दिया गया था। और श्रीराम अपनी पत्नी तथा छोटे भाई के साथ 14 वर्षों के लिये कटी कोट जंगलों में विचरण करके लंका पहुंचे जहां के राक्षस राजा रावण जो कि ऋषि- मुनियों को उनके तपपूजन में बाधा डालकर सत्कार कार्य नहीं करने देता था। सभी प्रकार की दानवी शक्तियों से पूर्ण रावण को अपनी ताकत पर बहुत अभिमान था वह जो चाहता था, करने में पीछे नहीं हटता था, उसने सभी मर्यादाओं को तोड़कर श्रीराम की पत्नी सीता का अपहरण करके राम के सामने एक चुनौती प्रस्तुत कर दी और बहुत समझाने-बुझाने के बाद भी वह नहीं माना। श्रीराम अपनी सेना सहित समुद्र पार कर लंका पहुंचे और दो वर्षों के युद्ध के बाद रावण को मार कर बुराईयों को समाप्त किया। चूंकि श्रीराम ने सभी मर्यादाओं का पालन करके बुराई पर अच्छाई की विजय दिलाई उनको मर्यादा पुरूषोत्तम राम के नाम से जाना जाने लगा। आपने 14 वर्षों के वनवास को काटकर श्रीराम अपने भार्या तथा अनुज के साथ अयोध्या लौटे तो राम के वियोग में डूबा पूरा अयोध्या नगर श्रीराम के आगमन की खुशी में सजाया गया। जगह-जगह दीपमालिका लगाई गई और एक अभूतपूर्व स्वागत किया गया। मान्यता यही है कि उसी तत्कालीन समय की खुशियों को हर वर्ष मनाने का रिवाज बन गया और हर वर्ष दिवाली मनाई जाने लगी। त्रेतायुग से चली यह दिवाली आज भी उतने की उल्लास उत्साह से मनाई जाती है। जितनी उस समय मनाई जाती थी दिवाली पर प्रत्येक घर से कूड़ा-करकट निकालकर लिपाई-पुताई प्रायः हर ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में की जाती है। दिवाली के दिये जलाकर तथा फटाखे फोड़कर खुशहाली का प्रदर्शन भी किया जाता है। हमारी परम्परा रही है कि जब तक पेट पूजा अच्छी या विशेष तरीके से ना हो जाये त्यौहार का मजा अधूरा रह जाता है। लक्ष्मी पूजन के साथ पेट की पूजा के लिये भी तरह-तरह के व्यंजन बनाने की प्रथा भी सामान्य रूप से हर घर में दिखती है। वर्षाऋतु के उपरांत खेतों की सफाई तैयारी करके गेहूं को छोड़कर सभी जिन्सों की बुआई कार्यक्रम करीब आधा निपट जाता है। जिसमें उत्साहित ग्रामीण क्षेत्रों में भी दिवाली पूर्ण उत्साह से मनाई जाती है। कृषि हमारी संस्कृति की संगीनी है उसकी प्रगति आने वाले सभी दिनों में खुशहाली समृद्धि लाती है।

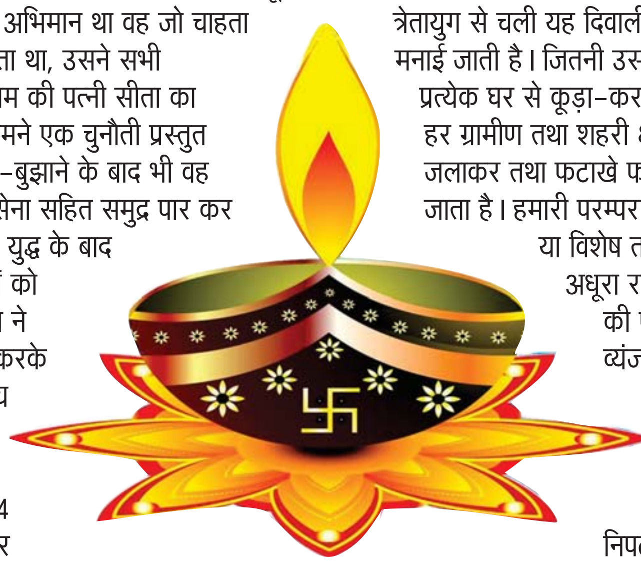

पर्वों का महापर्व दीपावली

दीपावली पर लक्ष्मी के साथ सरस्वती व श्रीगणेश को क्यों पूजते हैं?- दीपावली पर लक्ष्मी के साथ सरस्वती व गणपति की पूजा भी की जाती है। इसके पीछे लाइफ मैनेजमेंट से जुड़े कई खास सूत्र छिपे हैं। लक्ष्मी धन की देवी हैं, सरस्वती ज्ञान की तथा गणपति बुद्धि के देवता हैं।

दीपावली पर क्यों खाते हैं खील-बताशे?- दीपावली धन और ऐश्वर्य की प्राप्ति का त्योहार है। इस दिन मां लक्ष्मी का पूजन कर जीवनभर धन-संपत्ति की कामना की जाती है। खील-बताशे का प्रसाद किसी एक कारण से नहीं बल्कि उसके कई महत्व है, व्यवहारिक, दार्शनिक, और ज्योतिषीय ऐसे सभी कारणों से दीपावली पर खील-बताशे का प्रसाद चढ़ाया जाता है।

दीपावली पर क्यों करते हैं दीपदान?- धनतेरस से दीपावली तक नदी-तालाबों में दीपदान करने का प्रचलन है। शास्त्रों का मानना है कि दीपदान करने से नरक के दर्शन नहीं होते। दीपदान में लाइफ मैनेजमेंट के सूत्र भी छिपे हैं। दरअसल दीपदान इस बात का संकेत है कि हम अपने जीवन में ज्ञान और धर्म का उजाला लाएंगे। अज्ञान और अधर्म के कारण ही व्यक्ति को नर्क के दर्शन होते हैं यानी मरने के बाद नर्क में जाना पड़ता है। अज्ञानता के कारण हम अच्छे-बुरे का भेद नहीं कर पाते, परमात्मा को नहीं पहचान पाते। ज्ञान आने पर यह परेशानी दूर हो जाती है। ज्ञान आता है तो उसके साथ ही धर्म भी हमारे जीवन में प्रवेश करता है।

क्यों भगवान विष्णु के पैरों की ओर बैठती हैं माता लक्ष्मी?- हम सभी ने भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी के कई चित्र देखें हैं। अनेक चित्रों में भगवान विष्णु को बीच समुद्र में शेषनाग के ऊपर लेटे और माता लक्ष्मी को उनके चरण दबाते हुए दिखाया जाता है। माता लक्ष्मी यूं तो धन की देवी हैं तो भी वे भगवान विष्णु के चरणों में ही निवास करती हैं ऐसा क्यों? इसका कारण है कि भगवान विष्णु कर्म व पुरुषार्थ का प्रतीक हैं और माता लक्ष्मी उन्हीं के यहां निवास करती हैं जो विपरीत परिस्थितियों में भी पीछे नहीं हटते और कर्म व अपने पुरुषार्थ के बल पर विजय प्राप्त करते हैं जैसे कि भगवान विष्णु।

कमल के फूल पर ही क्यों बैठती हैं माता लक्ष्मी? - महालक्ष्मी के चित्रों और प्रतिमाओं में उन्हें कमल के पुष्प पर विराजित दर्शाया गया है। इसके पीछे धार्मिक कारण तो है साथ ही कमल के पुष्प पर विराजित लक्ष्मी जीवन प्रबंधन का महत्वपूर्ण संदेश भी देती हैं। महालक्ष्मी धन की देवी हैं। धन के संबंध में कहा जाता है कि इसका नशा सबसे अधिक दुष्प्रभाव देने वाला होता है। धन मोह-माया में डालने वाला है और जब धन किसी व्यक्ति पर हावी हो जाता है तो अधिकांश परिस्थितियों में वह व्यक्ति बुराई के रास्ते पर चल देता है। इसके जाल में फंसने वाले व्यक्ति का पतन होना निश्चित है।

वहीं कमल का फूल अपनी सुंदरता, निर्मलता और गुणों के लिए जाना जाता है।

कमल कीचड़ में ही खिलता है परंतु वह उस की गंदगी से परे है, उस पर गंदगी हावी नहीं हो पाती। कमल पर विराजित लक्ष्मी यही संदेश देती हैं कि वे उसी व्यक्ति पर कृपा बरसाती हैं जो कीचड़ जैसे बुरे समाज में भी कमल की तरह निष्पाप रहे और खुद पर बुराइयों को हावी ना होने दें। जिस व्यक्ति के पास अधिक धन है उसे कमल के फूल की तरह अधार्मिक कृत्यों से दूरी बनाए रखना चाहिए। साथ ही कमल पर स्वयं लक्ष्मी के विराजित होने के बाद भी उसे घमंड नहीं होता, वह सहज ही रहता है। इसी तरह धनवान व्यक्ति को भी सहज रहना चाहिए, जिससे उस पर लक्ष्मी सदैव प्रसन्न रहे।

दीपक का इतिहास

ज्योति अग्नि और उजाले का प्रतीक दीपक कितना पुरातन है इसके विषय में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। गुफाओं में भी यह मनुष्य के साथ था। कुछ बड़ी अंधेरी गुफ़ाओं में इतनी सुन्दर चित्रकारी मिलती है जिसे बिना दीपक के बनाना सम्भव नहीं था। भारत में दिये का इतिहास प्रामाणिक रूप से 5000 वर्षों से भी ज्यादा पुराना हैं जब इसे मुअन-जो-दडो में ईंटों के घरों में जलाया जाता था। खुदाइयों में वहाँ मिट्टी के पके दीपक मिले है। कमरों में दियों के लिये आले या ताक़ बनाए गए हैं, लटकाए जाने वाले दीप मिले हैं और आवागमन की सुविधा के लिए सड़क के दोनों ओर के घरों तथा भवनों के बड़े द्वार पर दीप योजना भी मिली है। इन द्वारों में दीपों को रखने के लिए कमानदार नक़्क़ाशीवाले आलों का निर्माण किया गया था।

दीपक भारतीय संस्कृति और जीवन में इस प्रकार मिला-जुला है कि इसके नाम पर भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक राग का नाम दीपक राग - रखा गया है। कहते हैं इसके गाने से दीपक अपने आप जलने लगते हैं।

फॉस्फेट समृद्ध जैविक खाद (प्रोम) का उत्पादन एवं प्रयोग

- अनिल कुमार सिंह • सिद्धार्थ नायक
- अक्षता तोमर • ऋचा सिंह
- दिनेश कुमार सिंह • रश्मि शुक्ला

aksjnkvv01@gmail.com

फॉस्फेट समृद्ध जैविक खाद (प्रोम) की क्रियाविधि

आज, दुनिया भर में खपत होने वाले 140 मिलियन टन उच्च-श्रेणी रॉक फॉस्फेट सामग्री का 90 प्रतिशत डीएपी बनाने में उपयोग किया जाता है। चूँकि कृत्रिम उर्वरक स्थानीय मिट्टी की वनस्पतियों और जीवों को नष्ट कर देते हैं, इसलिए वे वास्तव में कृषि उपज को प्रभावित करते हैं। मिट्टी में डायमोनियम या सिंगल सुपरफॉस्फेट में मौजूद फॉस्फोरस का केवल लगभग 20-25 प्रतिशत ही पौधों द्वारा उपयोग किया जाता है, शेष 75-80 प्रतिशत ऐसे रूपों में परिवर्तित हो जाता है जिनका उपयोग फसलों द्वारा नहीं किया जा सकता। ट्राइकैल्शियम फॉस्फेट, एक जल-अघुलनशील यौगिक, रॉक फॉस्फेट खनिज में फॉस्फोरस का अधिकांश भाग बनाता है। फॉस्फोरस मिट्टी में सबसे आसानी से घुलने वाला पीएच मान 5.5 और 7.0 के बीच होता है। एल्युमिनियम, आयरन और मैंगनीज आयन स्थानीय पीएच मान को 5.5 से ऊपर रखते हैं जबकि मैग्नीशियम और कैल्शियम आयन पीएच मान को 7 से ऊपर रखते हैं और फॉस्फोरस को उसके स्थिर अणु से बाहर निकलने से रोकते हैं। सूक्ष्मजीवों द्वारा उत्पादित कार्बनिक अम्लों के परिणामस्वरूप मिट्टी में मिले रॉक फॉस्फेट धूल से फॉस्फोरस का धीमा विघटन पौधों की जड़ों द्वारा फॉस्फोरस के अवशोषण को बढ़ाता है। जैविक खाद में मौजूद फॉस्फोरस को अन्य तत्व अघुलनशील अवस्था में नहीं रोक पाते। चूँकि यह जल में अघुलनशील होता है, इसलिए फॉस्फेट युक्त जैविक खाद में मौजूद फॉस्फोरस भूजल में रिसता नहीं है या अपवाह में नहीं जाता है। अधिकांश फॉस्फेट चट्टानों का उपयोग फॉस्फेट युक्त जैविक खाद बनाने के लिए किया जा सकता है।

फॉस्फेट युक्त जैविक खाद में फॉस्फेट की मात्रा अधिक होती है क्योंकि यह बारीक पिसे हुए

फॉस्फेट रॉक को जैविक खाद के साथ मिलाकर बनाई जाती है। वर्मीकम्पोस्ट, बायोगैस, पौधों के अपशिष्ट (जलकुंभी, कृषि अपशिष्ट और उद्यान अपशिष्ट सहित) और नगर पालिका/सेल्यूलोसिक अपशिष्टों के अवायवीय पाचन से उत्पन्न स्लज, जैविक खाद के सबसे अनुशंसित स्रोत हैं। अवायवीय पाचक स्लरी (अनएरोबिक डायजेस्टर स्लज-एडीएस) का एक अन्य लाभ यह है कि यह एक उपोत्पाद है और इसके लिए अलग से उत्पादन लागत की आवश्यकता नहीं होती है। डायमोनियम फॉस्फेट का एक प्राकृतिक, बेहतर और कम खर्चीला विकल्प फॉस्फोरस-समृद्ध जैविक खाद (प्रोम) का निर्माण है, जिसमें प्रेसमड और डिस्टिलरी अपशिष्ट को रॉक फॉस्फेट के साथ मिलाकर एक मूल्यवर्धित उत्पाद तैयार किया जाता है, जिसे 18 प्रतिशत पी2ओ5 और 22 प्रतिशत आर्द्रता के लिए मानकीकृत किया जाता है।

धान की फसलों पर प्रोम के कृषि संबंधी मूल्यांकन में पाया गया कि प्रोम के प्रयोग से धान के उत्पादन में डीएपी की तुलना में 29 प्रतिशत की वृद्धि हुई। चूँकि किसान प्रोम से परिचित नहीं हैं, जिस कारण अपनी फसलों के लिए पारंपरिक उर्वरकों का उपयोग करते हैं। यह वास्तव में सभी के लिए एक गंभीर समस्या है, ये उर्वरक मिट्टी के साथ-साथ पर्यावरण, पशु, मनुष्य आदि को भी नुकसान पहुंचाते हैं। खेती में सिंगल सुपर फॉस्फेट (एसएसपी), डायमोनियम फॉस्फेट (डीएपी), मोनोअमोनियम फॉस्फेट (एमएपी) आदि रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से मुक्त रहने वाले लाभदायक सूक्ष्मजीवों की संख्या कम हो जाती है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी भी फसल के लिए उपयोगी होते हैं। क्योंकि पौधों द्वारा इस उर्वरक की मात्रा का केवल 20-25 प्रतिशत तक ही उपयोग किया जाता है। इन उर्वरकों की शेष मात्रा मिट्टी में जमा हो जाती है और लगातार मिट्टी के पीएच को बढ़ाती है। प्रोम का निर्माण और बिक्री भारत में विभिन्न कृषि उद्योगों द्वारा की जाती है। रॉक फ़ॉस्फेट कण का आकार प्रोम की प्रभावकारिता पर सीधा प्रभाव डालता है। रॉक फॉस्फेट की सूक्ष्मता बढ़ने के साथ प्रोम की प्रभावशीलता भी बढ़ती है। घुलनशील फॉस्फेट के रूप में, रॉक फॉस्फेट अम्लीय और क्षारीय दोनों प्रकार की मिट्टी में अच्छी तरह काम करता है।

(क्रमश:)

पिछले दो दशकों से, जैविक खेती में फॉस्फेट रिच आर्गेनिक मैन्योर (फॉस्फेट युक्त जैविक खाद-प्रोम) का उपयोग शामिल है, जो डीएपी, एमएपी, एसएसपी और नाइट्रोफॉस्फेट जैसे कृत्रिम रासायनिक उर्वरकों से प्रतिस्पर्धा कर रहा है। फॉस्फेट युक्त जैविक खाद उच्च-श्रेणी रॉक फॉस्फेट (32 प्रतिशत पी2ओ5, 2 प्रतिशत कम अथवा अधिक) को बहुत बारीक मात्रा में मिलाकर बनाई जाती है। फॉस्फेट रत्न अयस्क को वर्मीकम्पोस्ट या अवायवीय पाचक अपमार्जक (बायोगैस इकाइयों से निकलने वाली स्लरी) जैसे जैविक खाद की उपस्थिति में बैसिलस मेगाथेरियम, वैरफॉस्फेटिक (फॉस्फेट घुलनशील जीवाणु) और एजोटोबैक्टर (नाइट्रोजन स्थिरीकरण जीवाणु) के सूक्ष्मजीव संवर्धन का उपयोग करके उपयोगी फॉस्फेट में जैव-रूपांतरित करके फॉस्फेट युक्त जैव उर्वरक तैयार किया जा सकता है। यह एक प्रकार का उर्वरक है जिसका उपयोग सिंगल सुपरफॉस्फेट और डायमोनियम फॉस्फेट (डीएपी) के विकल्प के रूप में किया जाता है। सभी पौधों को फास्फोरस की आवश्यकता होती है, लेकिन चूँकि मिट्टी में फास्फोरस का स्तर कम होता है, यह कृषि के लिए एक चुनौती प्रस्तुत करता है। कृषि उत्पादन के लिए आदर्श व्यापक पादप वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए फास्फोरस को मिट्टी में खासकर कूंडों में प्रदान किया जाना चाहिए। इसकी घुलनशीलता मिट्टी के पीएच, आसपास के वातावरण और उसमें मौजूद जीवाणुओं से प्रभावित होती है।

प्रोम के घटक व मात्रा

पौधों के अपशिष्ट,जैविक खाद यथा गोबर की खाद, वर्मीकम्पोस्ट, अवायवीय पाचक स्लज (एनएरोबिक डायजेस्टर स्लरी- एडीएस) द्वारा प्रोम तैयार करने हेतु इसके विभिन्न घटक तथा उनकी मात्रा निम्नानुसार प्रयोग की जाती है-

- जैविक खाद (गोबर की खाद, वर्मीकम्पोस्ट, अवायवीय पाचक स्लज - अनएरोबिक डायजेस्टर स्लज-एडीएस) - पांच टन
- उच्च श्रेणी रॉक फॉस्फेट - 200 किलोग्राम
- फॉस्फेट घुलनशील सूक्ष्मजीव (बैसिलस प्रजाति) -1.5-2 किलोग्राम
- 4. नाइट्रोजन स्थिरीकरण सूक्ष्मजीव (एजोटोबैक्टर) -1.5-2 किलोग्राम
- सूक्ष्म पोषक तत्व जैसे तांबा, जस्ता और बोरॉन आदि (माइक्रोन्यूट्रिएंट मिश्रण) - 500 ग्राम

उक्त समस्त घटकों के मिश्रण को एक गड्ढे में 90 दिनों तक अपघटन हेतु रखा जाता है। उक्त अवधि के पश्चात् लगभग 3.0 टन परिपक्व प्रोम प्राप्त होता है जिसमें लगभग 30-35 किग्रा नाइट्रोजन एवं 60-65 किग्रा पी2ओ5 की उपलब्धता होती है। इसके अतिरिक्त इसमें पोटैशियम, गंधक तथा आवश्यक सूक्ष्म तत्वों की उपलब्धता होती है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार बोन्द्रिया द्वारा एल.आई.जी.-5, सेक्टर -2 शंकर नगर, रायपुर 492001 (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित एवं कृषक जगत, 14 इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित, सम्पादक : सुनील गंगराड़े, समन्वयक : अतुल सक्सेना, रायपुर : प्रेम प्रकाश सुल्लेरे, फोन : 0771-2420449, मो. : 9826255862, इस अंक का मूल्य रु. 12/-, वार्षिक शुल्क रु. 600/- RNI No.-CHHHIN/2002/10910, E-mail-info@krishakjagat.org

दीपावली का महत्व

पर्व उत्साह के कारक होते हैं। इनकी महत्ता सर्वव्यापी है। भारत में वर्ष के दिनों से अधिक पर्व की संख्या है। भौतिक साधन के अभाव के पश्चात देश के प्रत्येक जन में अपार जोश का मुख्य स्रोत त्यौहार ही हैं। उत्सव में दीपावली का प्रमुख स्थान है। महालक्ष्मी की कृपा के अभाव में किसी भी भौतिकी कार्य अथवा सांसारिक कार्य का होना असंभव है। इस प्रधान आवश्यकता की पूर्ति हेतु इस पर्व को साधना व उत्साह से संपन्न करने की अपेक्षा सदैव जन मन में रहती है। इस पर्व को प्रकाश पर्व कहने का तात्पर्य भी यही है कि संपन्नता की रोशनी में ही श्रेष्ठ जीवन की संभावना है।

इस अवसर पर निवेश, हिसाब-किताब (बही), यम (पाप कार्य का स्मरण), कुबेर, (बचत व भंडारण), संपत्ति, पूँजी, पर्यावरण-प्रकृति पूजन व संबंधों की महत्ता से बद्ध पंच पर्व मनाए जाते हैं। इन सभी की प्रचुरता या उपलब्धता के उपरांत ही मानवीय जीवन की सफलता निश्चित होना है।

इस उत्सव को शास्त्रोक्त प्रकार से मनाने की नियम व पद्धति सभी धर्म ग्रंथों में उपलब्ध है। दीपावली का शाब्दिक अर्थ दीपों की पंक्ति या समूह है। उस दिन लोग बड़े उत्साह व उमंग के साथ घर, दुकान, गली, रास्ते, मकान, भवन आदि की सफाई कर सायंकाल सैकड़ों-हजारों दीप जलाकर सजावट करते हैं। इसीलिए यह त्योहार दीपावली के नाम से जाना जाता है। यों तो लोग दीपक प्रतिदिन घर, दुकान, देवालय और पूजन काल में जलाते हैं। किंतु वह दीपावली नहीं कहलाता। अतः दीपावली कोई विशेष उद्देश्य को लेकर है। यह उद्देश्य जानने की जिज्ञासा स्वाभाविक है। युगों से चली आ रही पारंपरिक पर्वों के लिए कोई न कोई शास्त्रीय या पारंपरिक व्यवस्था ही आधार मानी जाती है। दीपावली प्रायः दोनों सिद्धांतों का आधार है। प्रथम यद्यपि भगवान ने गीता में कहा है कि महीनों में मार्गशीर्ष मैं ही हूँ। फिर भी उन्हीं भगवान के वचनानुसार बारह महीनों में कार्तिक मास धार्मिक दृष्टि से उत्कृष्टतम माना गया है। चातुर्मास्य जो भगवान का विश्राम या शयन समय माना जाता है, उसका अंत कार्तिक में ही होता है और देवोत्थान एकादशी को भगवान का जागरण दिन माना जाता है। इस महीने में धर्मनिष्ठ लोग गंगा, काशी, प्रयाग, हरिद्वार में गंगातट पर महीने भर निवास कर पवित्र स्नान का लाभ उठाते हुए अपने मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

दीपावली अमावस्या को ही मनाई जाती है। उसका भी कुछ विशेष तर्क है। सूर्य चंद्रमसौ सह परः सन्निकर्ष अमावस्या। सूर्य और चंद्रमा दोनों अत्यंत सन्निधि में जिस दिन आते हैं, वह अमावस्या तिथि है। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से चंद्रमा की कला क्रमशः क्षीण होती हुई अमावस्या को सूर्य और चंद्र दोनों अत्यंत समीप होने से चंद्रमा कलाहीन होकर पुनः सूर्य से पृथक होता हुआ नवीन कला को धारण करता है। इसी अमावस्या से चंद्रमा की नवीन किरणें प्राप्त होती हैं। अतः अमावस्या को अंधकार का अंत और प्रकाश का प्रारंभ दोनों का प्रतीक कहा जा सकता है।

शास्त्रीय और लौकिक उपाख्यान है कि भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम राम लंका पर विजय प्राप्त कर जब अयोध्या आए तो खुशी में लोगों ने घर-घर, गलियों और मार्गों पर दीपक जलाकर विजयोल्लास का प्रदर्शन किया था।

पूर्व में राजाओं के यहाँ शारदीय पूर्णिमा को प्रदोष काल में लक्ष्मी पूजन किया जाता था। राजा लोग रात्रिभर पाशा खेलते थे। और रात्रि जागरण करते थे। उस रात्रि को कोजागरा भी कहते हैं। शास्त्रों में कोजागरा प्रदोषे लक्ष्मी पूजन का भी उल्लेख है। दीपावली की लक्ष्मी पूजा प्रारंभ में वणिक्वृत्ति वालों की थी किंतु धीरे-धीरे सभी ने दीपावली को ही लक्ष्मी पूजन करना प्रारंभ किया। आज सारा समाज ही दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन बड़े उत्साह के साथ करता है। यों तो गरीब से अमीर तक सबके सब दीपक जलाकर उत्साह मनाते हैं, लक्ष्मी पूजन करते हैं, धनवानों, सेठ-साहूकारों के महलों और दुकानों की सजावट निराली रहती है। लक्ष्मी माता मानों साक्षात विराजमान होकर उस अनोखी छटा को चार चाँद लगा देती है। लक्ष्मी पूजन के बाद एक-दूसरे का प्रेम मिलन, मिठाई वितरण आदि प्रक्रिया लोगों में आपसी सौहार्द्र तथा नए जीवन का संचार कर देती है। दीपावली त्यौहार की शुरुआत व समापन की अवधि 5 दिनों की होती है। पर्व की शुरुआत धनतेरस से होती है और भ्रातृ द्वितीया को उनका समापन होता है।

धनतेरस की महत्ता

कार्तिक मास की कृष्ण त्रयोदशी को धनतेरस कहते हैं। धनतेरस के दिन घर के द्वार पर एक दीपक जलाकर रखा जाता है। यह त्योहार दीपावली आने की पूर्व सूचना देता है। इस दिन नए बर्तन खरीदना शुभ माना जाता है। धनतेरस के दिन मृत्यु के देवता यमराज और भगवान धनवंतरी की पूजा का महत्व है।

क्यों मनाया जाता है धनतेरस का त्यौहार- भारतीय संस्कृति में स्वास्थ्य का स्थान धन से ऊपर माना जाता रहा है। यह कहावत आज भी प्रचलित है कि पहला सुख निरोगी काया, दूजा सुख घर में माया इसलिए दीपावली में सबसे पहले धनतेरस को महत्व दिया जाता है। जो भारतीय संस्कृति के हिसाब से बिल्कुल अनुकूल है। शास्त्रों में वर्णित कथाओं के अनुसार समुद्र मंथन के दौरान कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी के दिन भगवान धनवंतरी अपने हाथों में अमृत कलश लेकर प्रकट हुए।

मान्यता है कि भगवान धनवंतरी विष्णु के अंशावतार हैं। संसार में चिकित्सा विज्ञान के विस्तार और प्रसार के लिए ही भगवान विष्णु ने धनवंतरी का अवतार लिया था। भगवान धनवंतरी के प्रकट होने के उपलक्ष्य में ही धनतेरस का त्योहार मनाया जाता है।

क्या खास करें इस दिन- इस दिन अपने सामर्थ अनुसार किसी भी रूप में चांदी एवं अन्य धातु खरीदना अति शुभ है। धन संपत्ति की प्राप्ति हेतु कुबेर देवता के लिए घर के पूजा स्थल पर दीप दान करें एवं मृत्यु देवता यमराज के लिए मुख्य द्वार पर भी दीप दान करें।

इस दिन अपने घर की सफाई अवश्य करें। रूप और सौंदर्य प्राप्ति हेतु इस दिन शरीर पर उबटन लगाकर स्नान करें। अंजली पुत्र बजरंगबलि हनुमान का जन्म कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि में हुआ था इसलिए हनुमान जयंती भी इसी दिन मनाई जाती है। ऐसे में सायं काल उनका पूजन एवं सुंदर कांड का पाठ अवश्य करें।

माता लक्ष्मी

अनेक पौराणिक ग्रंथों में देवी लक्ष्मी के संदर्भ में वर्णन किया गया है। जानिए किस ग्रंथ में देवी लक्ष्मी के बारे में क्या कहा गया है-

- महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास लिखते हैं- पुरुषां धनं वधः अर्थात् लक्ष्मी का अभाव तो मनुष्य के लिए मृत्यु का चिह्न है। यदि मनुष्य पर लक्ष्मी की कृपा न हो तो इच्छाएं अधूरी रह जाने पर उसकी आत्मा को मुक्ति नहीं मिलती।
- ऋग्वेद के श्री सूक्त में भी भगवती लक्ष्मी से प्रार्थना की गई है- हे देवी, मैं आपका वरण करता हूं। आप दरिद्रा, अलक्ष्मी का नाश कर मेरे घर से असमृद्धि को दूर करें।
- भर्तृहरि संहिता में कहा गया है कि जिसके पास लक्ष्मी (धन) है, वही कुलीन है, वही पंडित है, वही गुणी है, वही श्रेष्ठ है, वही दर्शनीय है। मतलब यह है कि ये सभी गुण लक्ष्मी के आश्रित हैं। लक्ष्मी कृपा से ही इन सुखों की पूर्ण प्राप्ति संभव है। मनुष्य तो क्या देवताओं को भी अपने देवत्व कार्य पूर्ण करने के लिए लक्ष्मी की आराधना करें।
- श्री ब्रह्मपुराण में उल्लेख किया गया है कि दीपावली की अर्द्धरात्रि में लक्ष्मीजी सद्गृहस्थों के घरों में जहां-तहां विचरण करती रहती हैं। इसलिए लक्ष्मी के स्वागत के लिए सभी श्रद्धायुक्त जन अपने-अपने घरों को सभी प्रकार से स्वच्छ, शुद्ध और सुंदर रीति से सजाकर रखते हैं, ताकि लक्ष्मी प्रसन्न होकर उनके घर में प्रवेश करें व अपनी कृपा दिखाएं।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मी रूपेण संस्थिता:
नमस्तस्यै: नमस्तस्यै: नमस्तस्यै: नमो नम:

महालक्ष्मी पूजन मुहूर्त, कुबेर, बही खाता पूजन

धनतेरस पूजा मुहूर्त

18 अक्टूबर, शनिवार को प्रदोष काल का मुहूर्त शुभ रहेगा। इस दिन शाम के 4 बजकर 48 मिनट से लेकर शाम के 6 बजकर 18 मिनट तक का समय सबसे उत्तम रहेगा।

दिन का चौघड़िया

चल चौघड़िया : दिन के 12.6 से 1.31 बजे तक
लाभ चौघड़िया : दिन के 1.31 से 2.57 बजे तक
अमृत चौघड़िया : दिन के 2.57 से 4.22 बजे तक

शाम का चौघड़िया

लाभ चौघड़िया : शाम के 5.48 से 7.23 बजे तक
शुभ चौघड़िया : रात के 8.58 से 10.33 बजे तक
चल चौघड़िया : रात में 12.04 से लेकर मध्य रात्रि 1.39 बजे तक

20 अक्टूबर 2025, सोमवार, अमावस्या, विक्रम सं. 2082

लक्ष्मी पूजन मुहूर्त

गोधूलि संध्या : शाम 5:46 से 6:12 बजे तक
प्रदोष काल : शाम 5:46 से 8:18 बजे तक
वृषभ लग्न : शाम 7:16 से 9:09 बजे तक
मिथुन लग्न आरंभ : शाम 9:10 से 11:22 बजे तक
सिंह लग्न : रात्रि 1:19 से रात्रि के 3:56 बजे तक
लाभ की चौघड़िया : शाम 9:30 से रात्रि 11:29 बजे तक
शुभ की चौघड़िया : रात्रि 1:03 से रात्रि के 2:37 बजे तक
अमृत काल : रात्रि 2:37 मिनट से प्रात: 4:11 बजे तक

दिन का चौघड़िया							समय	रात का चौघड़िया						
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रात-दिन	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	6 से 7.30 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	7.30 से 9 तक	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	9 से 10.30 तक	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	10.30 से 12 तक	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	12 से 1.30 तक	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	1.30 से 3 तक	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	3 से 4.30 तक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	4.30 से 6 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

卐 जैन इरिगेशन सिस्टम्स लि. की ओर से कृषक जगत के पाठकों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ 卐
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल- जयपुर-रायपुर
शुभ
लाभ
जैन™
जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि.
छोटे छोटे कदम. आसमाँ छुनेका दम.®
ॐ श्री लक्ष्मी 卐 卐 प्रसन्न ॐ
महालक्ष्मी मंत्र - ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन महालक्ष्म्यै अस्मांक दारिद्र्य नाशय प्रचुर धन देहि देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ ।
जैन ड्रिप®
जैन स्प्रिंकलर®
जैन पाईप®
जैन प्लम्बिंग®
हाईटेक प्लॉन्ट फॅक्टरी®
जैन टिश्यूकल्चर™
जैन सोलर पम्प®
JAIN Water Piping System®
Solution for Generations.
drip TECH
A JAIN IRRIGATION COMPANY
जलगाँव - 0257-2258011; अलवर - 0144-2706611, 2706633; इंदौर - 9406802800; जयपुर - 9530390821; रायपुर - 9406802847

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि.

जैन इरीगेशन सिस्टम लि.

दीपावली के स्वादिष्ट व्यंजन

परतदार शकरपारे

सामग्री : मैदा चार कप, मोयन के लिए घी एक कप, शक्कर दो कप, पानी आधा कप, तलने के लिए घी, दो कप शक्कर से बनी दो तार की चाशनी।

विधि : मैदे में घी का मोयन देकर गुनगुने पानी की मदद से पूड़ी के आटे जैसा गूंथ लें। अब इसको गोल आकार में बेलकर लंबी–लंबी स्ट्रिप काटें। प्रत्येक स्ट्रिप पर थोड़ा–सा पानी फेरकर गोल–गोल करके फोल्ड कर दें। सारी स्ट्रिप को इसी तरह फोल्ड करके रखें।

अब कड़ाही में घी गरम करके धीमी आंच पर कुरकुरा होने तक तलें। जब सारे पारे तैयार हो जाएं तो दो कप शक्कर में आधा कप पानी डालकर दो तार की चाशनी तैयार करें। चाशनी ठंडी होने पर सभी पारे एक–एक करके उसमें डालकर निकालें। थोड़ी देर बाद एयर टाइट डिब्बे में रखें।

बेसन की कुरकुरी नमकीन पपड़ी

सामग्री: दो कटोरी बेसन, आधा कप तेल मोयन के लिए, अजवाइन व लाल मिर्च दो चम्मच, सौंफ, हींग, चुटकी भर बेकिंग पावडर, नमक स्वादानुसार, तलने के लिए तेल।

विधि: सबसे पहले बेसन में मोयन व सारी सामग्री अच्छी तरह मिलाकर गुनगुने पानी से सख्त गूंथे। छोटी–छोटी लोई बनाकर पतला बेलें। इन्हें चाकू से गोदकर थोड़ी देर कपड़े पर सूखने दें। अब एक कड़ाही में तेल गर्म करके मध्यम आंच पर गुलाबी होने तक तलें। तैयार कुरकुरी बेसन की नमकीन पपड़ी खिलाएं।

मीठे–मीठे अनारसे

सामग्री : 3 से 4 कप चावल, शक्कर, 1 चम्मच खसखस, घी या डालडा, दूध।

विधि: अनारसे बनाने की प्रक्रिया तीन दिन पहले से शुरू हो जाती है। जिस दिन अनारसे बनाना है उससे तीन दिन पहले चावल को धो लें। उसके बाद चावल में पानी डालकर रात भर के लिए रख दें।

दूसरे दिन चावल का पानी बदल कर फिर से रात भर के लिए रख दें। दूसरे दिन चावल से पानी अलग कर चावल सुखा लें और फिर उसे मिक्सी में ग्राइंड कर लें।

चावल से थोड़ी कम मात्रा में शक्कर लेकर उसे भी मिक्सी में ग्राइंड कर लें। चावल और शक्कर को मिलाकर गूंध लें और फिर रात भर के लिए रख दें। इसके बाद अनारसे बनाने से तीन चार घंटे पहले दूध मिलाकर गूंधे हुए आटे को छोड़ दें।

तीन चार घंटे बाद आटे की छोटी–छोटी पीठी बनाकर एक तरफ खसखस लगाएं। पीठी के जिस तरफ खसखस लगा है उस तरफ से घी में गोल्डन ब्राउन होने तक तल लें। इसे सिर्फ एक तरफ से ही तला जाता है। यह अनारसे एक तरह से मुलायम और दूसरी तरफ से थोड़े कड़े होते हैं।

स्वास्थ्य शिक्षण

स्वस्थ सेहत के लिए क्या करें

● हर व्यक्ति फल खाता है, परन्तु यह नहीं जानता कि कैसे खायें. पका हुआ केला शहद के साथ खायें, अति स्वास्थ्यवर्धक होगा। अधपका केला नहीं खाना चाहिए। केले को दूध के साथ मिलाकर शेक न बनाये बल्कि पहले दो केले खाये फिर ऊपर से गर्म दूध पियें, देह मांसल होगी।

● जब नींद न आये- पैर के नाखूनों पर तेल लगायें। भांग पीस कर तलुवों पर लगायें, जल्द नींद आ जायेगी। तुलसी के एक मुट्ठी भर पत्ते तकिये के नीचे रख दें।

● नेत्रज्योति- रोज नहाने से पूर्व पांव के अंगूठों में सरसों का तेल मलें, नेत्रज्योति बुढ़ापे तक कमजोर नहीं होगी।

● मोतियाबिन्द- रोज माथे पर असली चंदन घिस कर लगायें, मोतियाबिन्द नहीं होगा।

● दीर्घायु- जिस दिन बच्चा पैदा हो, उस दिन से 10 दिन तक लगातार बच्चे को असली सोने के चावल का आठवा भाग घिस कर थोड़ा सा जल मिला कर चटायें।

● आंखे दुखना - यदि यह महसूस हो कि आंखों में दर्द होने वाला है या फिर दर्द आरंभ हो गया हो तो ऐसी स्थिति में उसी समय उसी ओर के कान में रुई ठूस लें. यदि दोनों आंखों में दर्द है, तो दोनों कानों में रुई ठूंस लें. 2-3 घंटे के लिए दर्द ठीक हो जायेगा।

● हर प्रकार की खांसी दूर करें- गुदा पर दिन भर में 3-4 बार तेल चुपड़ते रहें, खांसी दूर हो जायेगी।

● पसली में दर्द- हींग को गरम पानी में घोल कर दर्द वाली पसली पर लेप करें, पसली का दर्द ठीक होगा।

● दाद, खाज, सिर की गंज- पका हुआ केला (केले का गूदा) नींबू के रस में पीस कर मलहम की तरह प्रभावित जगह पर लेप करें. इससे दाद, खाज, गंज में लाभ होगा।

● खूनी बवासीर में भुने हुए चने गरम-गरम खाने से आराम मिलता है।

● जब दस्त हो रहे हों- लौकी का रायता खायें।

● पैर के तलवे में जलन हो रही हो तो लौकी को काट कर तलवे पर मलें।

● हल्के दस्त में काली चाय (बिना दूध) में नींबू निचोड़ कर पियें।

● हृदय रोगियों के लिए पेय- जामुन, आम, अर्जुन की छाल ले कर दरदरा कूट लें रात को एक गिलास पानी में उसे भिगो दें, सुबह इसे छान कर एक चम्मच शहद के साथ मिलाकर इसे पी जायें, यदि साथ ही मधुमेह भी हो, तो शहद न डालें, बल्कि रात में उस गिलास में मेथी के दाने भी भिगो दें. मेथी मधुमेह को नियंत्रित करता है।

● जुकाम के रोगी को हर चीज गर्म ही खानी चाहिए, जैसे खाना, चाय, कॉफी, सूप, दाल आदि।

पीने का पानी गुनगुना होना चाहिए, अचार, चटनी, फ्रिज में रखी कोई चीज या ठंडी चीज न लें।

● जिन बच्चों का कद धीरे-धीरे बढ़ता हो (ज्यादातर 8-10 साल की उम्र के बीच के बच्चों के लिए)- एक खजूर, चार काली किशमिश, एक कप साफ पानी में रात को भिगोयें. सुबह दूध के साथ उन्हें खाने को दें या दूध में डालकर खाने को दें.

● तोतलेपन- इस समस्या से जूझने वाले बच्चों को कुछ समय तक रोज एक हरा ताजा आंवला खिलायें. लाभ होगा.

● आम टॉनिक (शक्ति व स्फूर्तिदायक) आम के 11 ऐसे पत्ते, जो पेड़ पर लगे-लगे ही पीले पड़ गये हों, उन्हें एक लीटर पानी में 4-5 इलायची डालकर तब तक पकायें, जब तक पानी आधा न रह -जाये. फिर उसे उतार कर इच्छानुसार दूध, चीनी डाल कर चाय की तरह पियें. ऐसा करने से कमजोरी दूर होगी.

माँ लक्ष्मी को कैसे प्रसन्न करें

● महालक्ष्मी के चित्र का पूजन करें, जिसमें लक्ष्मी अपने स्वामी भगवान विष्णु के पैरों के पास बैठी हैं। ऐसे चित्र का पूजन करने पर देवी बहुत जल्द प्रसन्न होती हैं।

● लक्ष्मी पूजन में सुपारी रखें। सुपारी पर लाल धागा लपेटकर अक्षत, कुमकुम, पुष्प आदि पूजन सामग्री से पूजा करें और पूजन के बाद इस सुपारी को तिजोरी में रखें।

● दीपावली पर तेल का दीपक जलाएं और दीपक में एक लौंग डालकर हनुमानजी की आरती करें। किसी हनुमान मंदिर जाकर ऐसा दीपक भी लगा सकते हैं।

● रात को सोने से पहले किसी चौराहे पर तेल का दीपक जलाएं और घर लौटकर आ जाएं। ध्यान रखें पीछे पलटकर न देखें।

● दीपावली के दिन अशोक के पेड़ के पत्तों से वंदनद्वार बनाएं और इसे मुख्य दरवाजे पर लगाएं। ऐसा करने से घर की नकारात्मक ऊर्जा नष्ट हो जाएगी।

● महालक्ष्मी के पूजन में पीली कौड़ियां भी रखनी चाहिए। ये कौड़िया पूजन में रखने से महालक्ष्मी बहुत ही जल्द प्रसन्न होती हैं। आपकी धन संबंधी सभी परेशानियां खत्म हो जाएंगी।

● दीपावली की रात लक्ष्मी पूजा करते समय एक थोड़ा बड़ा घी का दीपक जलाएं, जिसमें नौ बत्तियां लगाई जा सके। सभी 9 बत्तियां जलाएं और लक्ष्मी पूजा करें।

● दीपावली की रात में लक्ष्मी पूजन के साथ ही अपनी दुकान, कम्प्यूटर आदि ऐसी चीजों की भी पूजा करें, जो आपकी कमाई का साधन हैं।

● दीपावली के दिन घर से निकलते ही यदि कोई सुहागन स्त्री लाल रंग की पारंपरिक ड्रेस में दिख जाए तो समझ लें आप पर महालक्ष्मी की कृपा होने वाली है। यह एक शुभ शकुन है। ऐसा होने पर किसी जरूरतमंद सुहागन स्त्री को सुहाग की सामग्री दान करें।

● दीपावली की रात में लक्ष्मी और कुबेर देव का पूजन करें और यहां दिए एक मंत्र का जप कम से कम 108 बार करें।

मंत्र: ऊँ यक्षाय कुबेराय वैश्रववाय, धन–धान्यधिपतये धन–धान्य समृद्धि मम देहि दापय स्वाहा।

● महालक्ष्मी के पूजन में गोमती चक्र भी रखना चाहिए। गोमती चक्र भी घर में धन संबंधी लाभ दिलाता है।

● दीपावली से एक नियम हर रोज के लिए बना लें। आपके घर में जब भी खाना बने तो उसमें से सबसे पहली रोटी गाय को खिलाएं।

पाक्षिक पंचांग

20 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2025
विक्रम संवत् 2082
कार्तिक कृष्ण 14 से कार्तिक शुक्ल 11 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार
20	अक्टूबर	सोम	कार्तिक कृष्ण	14 दीपावली
21	अक्टूबर	मंगल	----------	30 स्ना.दा. अमावस्या
22	अक्टूबर	बुध	कार्तिक शुक्ल	1 गोवर्धन पूजा
23	अक्टूबर	गुरु	----------	2 भाई दोज
24	अक्टूबर	शुक्र	----------	3
25	अक्टूबर	शनि	----------	4 विनायकी चतुर्थी व्रत
26	अक्टूबर	रवि	----------	5 पांडव पंचमी
27	अक्टूबर	सोम	----------	6 डाला छठ
28	अक्टूबर	मंगल	----------	7
29	अक्टूबर	बुध	----------	8 गोपाष्टमी
30	अक्टूबर	गुरु	----------	9 अक्षय (आंवला) नवमी पंचक 2.15 रात से
31	अक्टूबर	शुक्र	----------	10 पंचक
1	नवम्बर	शनि	----------	11 देवउठनी एकादशी, पंचक
2	नवम्बर	रवि	----------	12 चातुर्मास समाप्त, पंचक

समस्या-समाधान

समस्या– सूरन कंद/गराडु की खेती के संबंध में जानकारी दें।

– सुन्दरलाल

समाधान– *यह रतालू, जिमीकंद, गराडु, सूरन के नाम से जाना जाता है।*

- *अच्छी निकासी वाली उपजाऊ दोमट मिट्टी उपयुक्त रहती है,*
- *एक हेक्टेयर में 20 से 30 क्विंटल बीज लगेगा।*
- *अच्छी तैयारी जमीन में 50-50 से.मी दूरी पर डोलियां बना लें।*
- *पर्याप्त गोबर खाद खेत में मिला दें।*
- *भूमि में आखिरी जुताई में 250 किलो पोटाश मिला दे।*
- *बुआई अप्रैल से जून तक करें।*
- *इन डोलियों में 30 से.मी. दूरी पर 6*

से.मी. गहराई पर सूरन, रतालू लगाये।

- *बुआई के पूर्व बीज के टुकड़ों को मेन्कोजेब के 0.2 प्रतिशत घोल से 5 मिनट तक उपचारित कर लें।*
- *जब बेले 30 से.मी. लंबी हो जायें छड़ियां या अन्य विधि से उन्हें सहारा दें।*
- *25 किलो नत्रजन बुआई के तीन माह बाद।*
- *प्रमुख जातियां हैं श्री विधि,श्री रूपा, श्री शुभ्रा, श्री प्रिया।*
- *प्रथम सिंचाई बुआई के तुरन्त बाद करें। फसल को 15 से 25 सिंचाई की आवश्यकता होती है।*
- *निराई करते समय पौधों में मिट्टी चढ़ाते रहे।*
- *फसल दिसम्बर-जनवरी में (8-9 माह बाद) खुदाई लायक हो जाती है।*
- *उपज 250 से 400 क्विंटल/हे. आती है।*

समस्या– वर्तमान में पानी के छोटे-मोटे झल्ले आ रहे हैं। क्या अभी गेहूं की बुआई की जा सकती है। कौन सी जाति, कितना खाद कृपया बतायें।

– मनमोहन ठाकुर

समाधान– *वर्तमान की वर्षा रबी फसलों के लिये वरदान साबित हो रही है। पानी के झल्लों*

से भूमि को भीतरी नमी और बाहरी नमी मिल रही हैं जो जड़ों के विकास के लिये बहुत उपयोगी है। मौसम में ठण्डक भी हो गई है। आप वर्षा आधारित गेहूं की बुआई शुरू कर सकते हैं। गेहूं के अलावा यदि अन्य रबी फसल भी लेना हो तो मसूर, अलसी, मटर की बुआई पहले करें फिर गेहूं की बोनी अक्टूबर में ही निपटाई जा सकती है। आप निम्न उपाय करें।

- *जातियों में सी-306, सुजाता, एच 50-2004, मेघदूत, नर्मदा 4, नर्मदा 112 इत्यादि लगा सकते हैं।*
- *एक हेक्टर में 100-125 किलो लगेगा।*
- *कतार से कतार 25-30 से.मी. बीज 6 से.मी. गहराई पर बोयें।*
- *उर्वरक में यूरिया 87 किलो, सिंगल सुपर फास्फेट 125 किलो तथा म्यूरेट ऑफ पोटाश 33 किलो प्रति हे. की दर से डालें।*
- *बोआई पूर्व बीज का उपचार 2 ग्राम थाइरम प्रति किलो बीज द्वारा करें।*
- *कृषक जगत द्वारा गेहूं फसल की उत्पादन तकनीकी का विस्तार से पुस्तक का प्रकाशन किया गया है, आप उसे बुलवा लें अधिक मार्गदर्शन मिलेगा।*

समस्या– मटर की बोनी कब तक की जानी चाहिए। अगेती मटर की जातियां कौन-कौन सी हैं, बतायें।

– मुन्नालाल सोनी

समाधान– *मटर यदि अगेती लगाई जाये तो अच्छी आमदनी मिल सकती है। आप मटर अभी लगा सकते हैं, पानी के झल्ले आ रहे हैं भूमि में पर्याप्त नमी उपलब्ध हो रही है। आप निम्न तकनीकी अपनायें।*

- *भूमि की तैयारी अच्छी तरह से करें ताकि अच्छा अंकुरण मिल सके।*
- *जातियों में अर्किल, जवाहर मटर 3, 4, जवाहर मटर 54 तथा आजाद।*
- *अच्छे अंकुरण के लिये यदि बीज को 24 घंटे पानी में भिगोकर रखें, छाया में सुखाकर 2 ग्राम थाइरम प्रति किलो बीज का उपचार करें।*
- *इसके अलावा बीज का उपचार राइजोबियम कल्चर 200 ग्राम का पैकट 10 किलो बीज के लिए पर्याप्त होगा।*
- *बीज दर 125 से 140 किलो प्रति हेक्टर की दर से डालें।*
- *उर्वरक में यूरिया 43 किलो, सिंगल सुपर फास्फेट 250 किलो तथा 33 किलो म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति हे. की दर से डालें।*

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान
कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

कृषक जगत जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, विज्ञापन, समाचार, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-
उत्तम कुमार देशमुख
(जिला प्रतिनिधि)
नावेल्टी न्यूज एजेंसी
ग्राम निकुंम, जिला दुर्ग (छ.ग.)
मो. : 8236059865

कृषक जगत जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, छोटे-बड़े विज्ञापन, कृषि समाचार, कृषि लेख, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-
बलभद्र शर्मा
डागा चौक वार्ड नं. 10, खरियार रोड, नुआपाड़ा (उड़ीसा)
पिन नं. 766104
मो. : 6371774361

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि
- बीज ▪ औषधीय फसल

विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक
- अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.

कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्रायें, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)
62 62 166 222
www.krishakjagat.org
@krishakjagat
@krishakjagatindia
@krishak_jagat

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ **वार्षिक रु. 600/-** ⇨ **दो वर्ष रु. 1000/-**
⇨ **तीन वर्ष रु. 1500/-**

डाक से नियमित रूप से **'कृषक जगत'** – प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम ....

....

ग्राम ....पो. ....

डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : ....

वि.ख. .... तह. ....

जिला .... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य ....

शिक्षा .... भूमि .... उम्र ....

ट्रैक्टर/मॉडल .... फोन/मो. ....

ई-मेल ....

मेरा सदस्यता शुल्क रुपये .... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/

मनीऑर्डर/क्र. .... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php

Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793, Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.),मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

अंधकार की ओर नहीं प्रकाश की ओर चल

भारत पर्व प्रधान देश भी है जहाँ वर्ष भर में प्रत्येक महीने कोई न कोई पर्व आ ही जाता है, जिसके पीछे केवल उत्सव मनाकर बाहरी आनंद लूटना मात्र उद्देश्य नहीं होता। उसके पीछे एक महान उद्देश्य को लिए हुए किसी लक्ष्य की प्राप्ति का महासंदेश निहित होता है। दीपावली या महालक्ष्मी आराधना का पर्व भी किसी लक्ष्य विशेष की ओर संकेत करता है।

इसमें उपनिषद् का यह वाक्य तमसो मा ज्योतिर्गमय इस पर्व का ध्येय वाक्य है। यहाँ तम और ज्योति दो शब्दों का प्रयोग हुआ है। तम का अर्थ सामान्यत: अंधकार होता है और ज्योति का अर्थ प्रकाश लेकिन क्या हम अमावस की कालीरात्रि को दीपक, बिजली की मालाएं, बम-पटाखे और फुलझड़ियां जलाकर अंधेरे को मिटा पाते हैं? यदि ऐसा होता तो फिर साल के बाद दीपावली मनाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती।

वैसे भी हर महीने अमावस की रात आती रहती है तब किस अंधकार से हटकर हमें किस प्रकाश की ओर बढ़ने का उपनिषद् आदेश देता है। दीप, माला, फुलझड़ी, पटाखे आदि तो मात्र ध्यानाकर्षण के वाह्य प्रतिमान हैं।

वस्तुत: मनुष्य के अंत:करण में जो राग-द्वेष आदि के कारण अज्ञान का अंधकार छाया रहता है उसके कारण व्यक्ति स्वार्थ के वशीभूत होकर हित-अहित, कर्तव्य, अकर्तव्य के विवेक से शून्य होकर पाप, शोषण, अत्याचार, अन्याय, प्रतिशोध, घृणा आदि की कालीपरतों से घिर जाता है उस अज्ञान की कालीरात्रि से उपराम होने के लिए सत्य, प्रेम, अहिंसा, सौहार्द्र, न्यायप्रियता, कर्तव्यपालन सहित अनंत ज्योतिकिरणों की फुलझड़ियों से अपने जीवन को जगमगा दें।

> उपनिषद् वाक्य कहता है असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतं गमय यानी कि असत् की ओर नहीं ज्योति की ओर बढ़ो, मृत्यु की ओर नहीं, अमृतत्व की ओर बढ़ो। यहां क्रिया का प्रयोग न कर लोट् लकार अर्थात् आज्ञा वाचक क्रिया का प्रयोग किया है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि मानव तू अंधकार की ओर नहीं प्रकाश की ओर चल।

दीपावली का पर्व हमें स्वयं जागृत होकर अपने आसपास को भी जागृत करने का संदेश देता है। इसीलिए कहा है आप्त दीपो भव यदि हम अपने अंत:करण में ज्ञान की ज्योति जलाने में समर्थ हो जाते हैं तो उसके प्रभाव से हमारे आस-पास का परिवेश भी जागृत होने लगेगा।

एक जलता दीप दूसरे दीप को प्रज्वलित करते-करते अनंत दीपों का प्रकाशक हो जाएगा तभी संपूर्ण संसार से अज्ञान का अंधकार छंटकर ज्ञान का आलोक छा जाएगा तब उस आलोकित आभा में परमात्मा की इस अनूठी रचना का एक-एक सत्य प्रतिभाषित होने लगेगा और चारों ओर सुख-शांति की श्री बिखर जाएगी यही श्री यानि शोभा ही तो है वास्तविक महालक्ष्मी की अखंड कृपा।

भारतवर्ष से इन पर्वों का सारे विश्व को प्राचीन काल से यही संदेश मिलता रहा इसलिए हम विश्व बंधुत्व की भावना के प्रथम उद्घोषक कहलाते हैं। यही भावना हमें विश्व गुरु बनाए रखती है इसीलिए हमारे हिंदुस्तान का एक प्राचीन नाम भारतवर्ष भी है जिसका अर्थ है भाषायाँ रत: स एव भारत: अर्थात् भा का तात्पर्य है प्रकाश, रत का तात्पर्य है लगे रहना अत: जो निरंतर प्रकाश की ओर, ज्ञान की ओर, ईश्वर की खोज की ओर प्रयत्न रहे वही भारत है। अत: महालक्ष्मी पूजा का यह प्रकाश पर्व हमें भारतवर्ष का सच्चा भक्त होने का प्रमाण भी देता है। आवश्यकता है इस पर्व के दिन आत्मंथन की, क्या हम भारतवर्ष नाम को सार्थक करने में अग्रसर हैं।

कौन-कौन से आठ स्थानों पर दीपक लगाना चाहिए

दीपावली की रात महादेवी लक्ष्मी को मनाने का सबसे अच्छा समय रहता है। शास्त्रों के अनुसार ऐसा माना जाता है कि इस रात देवी महालक्ष्मी पृथ्वी पर भ्रमण करती हैं। अत- इस रात को देवी को प्रसन्न करने के लिए विभिन्न उपाय बताए गए हैं। प्राचीन समय से परंपरा चली आ रही है कि दीपावली की रात में कुछ विशेष स्थानों पर दीपक लगाने से देवी लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है। यहां जानिए दिवाली की रात में कहां-कहां दीपक लगाना चाहिए, जिससे आपकी पैसों से जुड़ी समस्याएं समाप्त हो सकती हैं।

जानिए कौन-कौन से आठ स्थानों पर दीपक लगाना चाहिए...

- पीपल के पेड़ के नीचे दीपावली की रात एक दीपक लगाकर घर लौट आएं। दीपक लगाने के बाद पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए। ऐसा करने पर आपकी धन से जुड़ी समस्याएं दूर हो सकती हैं।
- यदि संभव हो सके तो दिवाली की रात के समय किसी श्मशान में दीपक लगाएं। यदि यह संभव ना हो तो किसी सुनसान इलाके में स्थित मंदिर में दीपक लगा सकते हैं।
- धन प्राप्ति की कामना करने वाले व्यक्ति को दीपावली की रात मुख्य दरवाजे की चौखट के दोनों ओर दीपक अवश्य लगाना चाहिए।
- हमारे घर के आसपास वाले चौराहे पर रात के समय दीपक लगाना चाहिए। ऐसा करने पर पैसों से जुड़ी समस्याएं समाप्त हो सकती हैं।
- घर के पूजन स्थल में दीपक लगाएं, जो पूरी रात बुझना नहीं चाहिए। ऐसा करने पर महालक्ष्मी प्रसन्न होती हैं।
- किसी बिल्व पत्र के पेड़ के नीचे दीपावली की शाम दीपक लगाएं। बिल्व पत्र भगवान शिव का प्रिय वृक्ष है। अत: यहां दीपक लगाने पर उनकी कृपा प्राप्त होती है।
- घर के आसपास जो भी मंदिर हो वहां रात के समय दीपक अवश्य लगाएं। इससे सभी देवी-देवताओं की कृपा प्राप्त होती है।
- घर के आंगन में भी दीपक लगाना चाहिए। ध्यान रखें यह दीपक भी रातभर बुझना नहीं चाहिए।

दीवाली की परंपराओं में जीवन प्रबंधन के सूत्र

दीपावली पर लक्ष्मी के साथ सरस्वती व श्रीगणेश को क्यों पूजते हैं?- दीपावली पर लक्ष्मी के साथ सरस्वती व गणपति की पूजा भी की जाती है। इसके पीछे लाइफ मैनेजमेंट से जुड़े कई खास सूत्र छिपे हैं। लक्ष्मी धन की देवी हैं, सरस्वती ज्ञान की तथा गणपति बुद्धि के देवता हैं।

दीपावली पर क्यों खाते हैं खील-बताशे?- दीपावली धन और ऐश्वर्य की प्राप्ति का त्योहार है। इस दिन मां लक्ष्मी का पूजन कर जीवनभर धन-संपत्ति की कामना की जाती है। खील-बताशे का प्रसाद किसी एक कारण से नहीं बल्कि उसके कई महत्व है, व्यवहारिक, दार्शनिक, और ज्योतिषीय ऐसे सभी कारणों से दीपावली पर खील-बताशे का प्रसाद चढ़ाया जाता है।

दीपावली पर क्यों करते हैं दीपदान?- धनतेरस से दीपावली तक नदी-तालाबों में दीपदान करने का प्रचलन है। शास्त्रों का मानना है कि दीपदान करने से नरक के दर्शन नहीं होते। दीपदान में लाइफ मैनेजमेंट के सूत्र भी छिपे हैं। दरअसल दीपदान इस बात का संकेत है कि हम अपने जीवन में ज्ञान और धर्म का उजाला लाएंगे। अज्ञान और अधर्म के कारण ही व्यक्ति को नर्क के दर्शन होते हैं यानी मरने के बाद नर्क में जाना पड़ता है। अज्ञानता के कारण हम अच्छे-बुरे का भेद नहीं कर पाते, परमात्मा को नहीं पहचान पाते। ज्ञान आने पर यह परेशानी दूर हो जाती है। ज्ञान आता है तो उसके साथ ही धर्म भी हमारे जीवन में प्रवेश करता है।

क्यों भगवान विष्णु के पैरों की ओर बैठती हैं माता लक्ष्मी?- हम सभी ने भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी के कई चित्र देखें हैं। अनेक चित्रों में भगवान विष्णु को बीच समुद्र में शेषनाग के ऊपर लेटे और माता लक्ष्मी को उनके चरण दबाते हुए दिखाया जाता है। माता लक्ष्मी यूं तो धन की देवी हैं तो भी वे भगवान विष्णु के चरणों में ही निवास करती हैं ऐसा क्यों? इसका कारण हैं कि भगवान विष्णु कर्म व पुरुषार्थ का प्रतीक हैं और माता लक्ष्मी उन्हीं के यहां निवास करती हैं जो विपरीत परिस्थितियों में भी पीछे नहीं हटते और कर्म व अपने पुरुषार्थ के बल पर विजय प्राप्त करते हैं जैसे कि भगवान विष्णु।

कमल के फूल पर ही क्यों बैठती हैं माता लक्ष्मी? - महालक्ष्मी के चित्रों और प्रतिमाओं में उन्हें कमल के पुष्प पर विराजित दर्शाया गया है। इसके पीछे धार्मिक कारण तो है साथ ही कमल के पुष्प पर विराजित लक्ष्मी जीवन प्रबंधन का महत्वपूर्ण संदेश भी देती हैं। महालक्ष्मी धन की देवी हैं। धन के संबंध में कहा जाता है कि इसका नशा सबसे अधिक दुष्प्रभाव देने वाला होता है। धन मोह-माया में डालने वाला है और जब धन किसी व्यक्ति पर हावी हो जाता है तो अधिकांश परिस्थितियों में वह व्यक्ति बुराई के रास्ते पर चल देता है। इसके जाल में फंसने वाले व्यक्ति का पतन होना निश्चित है। वहीं कमल का फूल अपनी सुंदरता, निर्मलता और गुणों के लिए जाना जाता है।

मुख्यमंत्री के निर्देशों पर त्वरित अमल सुनिश्चित करें : श्री शील

मुख्य सचिव ने की उच्च स्तरीय बैठक में कार्यों की समीक्षा

रायपुर। मुख्य सचिव श्री विकास शील ने कहा कि कलेक्टर कॉन्फ्रेंस में मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय द्वारा दिए गए निर्देशों पर त्वरित और प्रभावी अमल सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने सभी विभागीय सचिवों को सड़क, पेयजल, बिजली, स्वास्थ्य सहित अन्य प्राथमिक क्षेत्रों के लिए ठोस एक्शन प्लान तैयार करने के निर्देश दिए। मुख्य सचिव मंत्रालय में आयोजित उच्च स्तरीय बैठक में विभिन्न विभागों के भारसाधक सचिवों के साथ योजनाओं के क्रियान्वयन की प्रगति की समीक्षा कर रहे थे।

बैठक के दौरान मुख्य सचिव ने प्रधानमंत्री गति शक्ति योजना में शामिल विभागों के एक्शन प्लान्स की विस्तृत जानकारी ली। उन्होंने निर्देश दिया कि जिन कार्यों का शिलान्यास किया जा चुका है, उन्हें निर्धारित समय-सीमा के भीतर पूर्ण कर लोकार्पण सुनिश्चित किया जाए।बैठक में वाणिज्य एवं उद्योग विभाग के सचिव श्री रजत कुमार ने प्रधानमंत्री गति शक्ति योजना तथा जेम पोर्टल के माध्यम से शासकीय विभागों में की जा रही खरीदी की प्रक्रिया पर प्रस्तुतीकरण दिया। इसी प्रकार, मुख्यमंत्री के संयुक्त सचिव एवं आयुक्त जनसम्पर्क डॉ. रवि मित्तल ने जनसम्पर्क विभाग द्वारा शासन की योजनाओं के प्रचार-प्रसार से संबंधित गतिविधियों पर विस्तृत प्रस्तुतिकरण दिया।

बैठक में अपर मुख्य सचिव गृह एवं जेल श्री मनोज कुमार पिंगुआ, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग की अपर मुख्य सचिव श्रीमती ऋचा शर्मा, आदिम जाति तथा अनुसूचित जनजाति विकास विभाग के प्रमुख सचिव श्री सोनमणि बोरा, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग की प्रमुख सचिव श्रीमती निहारिका बारिक सहित सभी विभागों के सचिव उपस्थित थे।

छ.ग. के राज्यपाल ने उपराष्ट्रपति से की भेंट

रायपुर। छत्तीसगढ़ के राज्यपाल श्री रमेन डेका ने नई दिल्ली में उपराष्ट्रपति श्री सी.पी. राधाकृष्णन से भेंट कर विभिन्न विषयों पर महत्वपूर्ण चर्चा की।

कृषि विश्वविद्यालय के नए कुलसचिव ने पदभार ग्रहण किया

रायपुर। इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के नवनियुक्त कुलसचिव श्री कपिलदेव दीपक ने पदभार ग्रहण किया। उन्होंने प्रभारी कुलसचिव डॉ. सी. पी. खरे से कुलसचिव पद का प्रभार लिया। पदभार ग्रहण करने के उपरांत श्री दीपक ने कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल से सौजन्य मुलाकात की। डॉ. चंदेल ने श्री दीपक को उनके सफल कार्यकाल हेतु शुभकामनाएं दीं। श्री कपिल देव दीपक ने विश्वविद्यालय के अधिकारियों से संवाद कर विश्वविद्यालय की कार्यप्रणाली एवं गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त की।

किसानों से समर्थन मूल्य पर धान खरीदी 15 नवम्बर से प्रारंभ होगी

राज्य शासन ने की विस्तृत तैयारी

रायपुर। राज्य शासन द्वारा खरीफ विपणन वर्ष 2025-26 के अंतर्गत किसानों से समर्थन मूल्य पर धान का उपार्जन 15 नवम्बर 2025 से प्रारंभ किये जाने का निर्णय लिया गया है।धान उपार्जन की प्रक्रिया को अधिक कृषक उन्मुख, दक्ष और पारदर्शी बनाने के उद्देश्य से खाद्य विभाग द्वारा संभागवार जिला स्तरीय अधिकारियों की कार्यशाला सह-प्रशिक्षण का आयोजन किया जा रहा है। सचिव, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग, प्रबंध संचालक, विपणन संघ तथा संचालक, खाद्य विभाग के मार्गदर्शन में रायपुर एवं बिलासपुर संभागों के जिला स्तरीय अधिकारियों को को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस प्रशिक्षण में जिलों से नोडल अधिकारी के रूप में अपर कलेक्टर एवं डिप्टी कलेक्टर सम्मिलित हुए, साथ ही जिला विपणन अधिकारी, जिला खाद्य अधिकारी, उप-पंजीयक / सहायक पंजीयक सहकारिता, संग्रहण केंद्र प्रभारी, उपार्जन केंद्र प्रभारी और डाटा एंट्री ऑपरेटर आदि भी प्रशिक्षणार्थी के रूप में उपस्थित थे।

कंट्रोल एंड कमांड सेंटर से होगी धान उपार्जन की सतत निगरानी- उल्लेखनीय है कि शासन द्वारा धान उपार्जन एवं निराकरण प्रक्रिया में संभावित अनियमितताओं को नियंत्रित करने के उद्देश्य से विपणन संघ मुख्यालय स्तर पर 'इंटीग्रेटेड कंट्रोल एंड कमांड सेंटर' की स्थापना का निर्णय लिया गया है।

इसके क्रियान्वयन हेतु जिला स्तर पर भी कंट्रोल एंड कमांड सेंटर स्थापित किये जा रहे हैं। इस संदर्भ में मोबाइल एप के माध्यम से विभिन्न प्रकार के अलर्ट के निराकरण की प्रक्रिया पर संबंधित अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया है।

किसानों की सुविधा और पारदर्शिता सुनिश्चित करने हेतु विशेष प्रशिक्षण- उपार्जन केंद्रों में धान के उचित रखरखाव एवं किसानों की सुविधाओं के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने हेतु उपार्जन केंद्र प्रभारियों और सहकारिता विभाग के अधिकारियों को भी प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इसके अलावा इंटीग्रेटेड कंट्रोल एंड कमांड सेंटर से प्राप्त अलर्ट संदेशों के आधार पर उड़नदस्ता दल द्वारा तत्काल कार्रवाई की जाएगी। प्रदेश के सीमावर्ती उपार्जन केंद्रों में पर्याप्त चेक पोस्ट की स्थापना की जा रही है ताकि अवैध धान की आवक को रोका जा सके।

जिला स्तरीय अधिकारियों द्वारा 25 अक्टूबर से 30 अक्टूबर 2025 के मध्य जिला एवं अनुविभाग स्तर पर धान उपार्जन विषयक प्रशिक्षण आयोजित किया जाएगा। इसके बाद 4 नवम्बर से 7 नवम्बर 2025 के बीच उपार्जन केंद्रों में ट्रायल रन किया जाएगा तथा 09 नवम्बर 2025 से टोकन आवेदन प्रक्रिया प्रारंभ होगी। सभी जिलों को 30 अक्टूबर 2025 तक धान उपार्जन से संबंधित सभी तैयारियां पूर्ण करने के निर्देश दिए गए हैं।

सर्वोत्तम गुणवत्तावाली
जैन ड्रिप की विस्तृत उत्पादन श्रृंखला -
सभी फसलों # के लिए हर किसान के बजट के अनुरूप विभिन्न प्रकार के ड्रिप सिचाई व्यवस्था के विकल्प स्टॉक में उपलब्ध हैं।
(# दलहन, धान, तिलहन, सब्जियाँ एवं फल बागानें आदि के लिए)

जैन टर्बो स्लिम - टीई व सुपर सेव्हर
5 से 20 मील (0.13 से 0.5 मिमी)
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो एक्सेल प्लस
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो लाईन सुपर
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी साईज

जैन टर्बो लाईन - पीसी
क्लास २
साईज - १६, २० मिमी

जैन टर्बो टॉप - एचडी पीसी
१३, १५ मील (०.33, ०.38 मिमी) - क्लास 1 व 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन पॉलीट्यूब एवं ड्रिपर्स
साईज - 12, 16, 20, 25, 32 मिमी

नोट : ड्रिपर्स व ड्रिपलाईन अलग-अलग प्रेशर रेटींग में उपलब्ध

जैन ड्रिप® प्रति बूँद, फसल भरपूर!®
जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि. छोटे छोटे कदम. आसमान छूने का दम!®
दूरभाष: 0257-2258011; 6600800
टोल फ्री : 1800 599 5000
ई-मेल: jisl@jains.com; वेबसाईट: www.jains.com

ड्रिपलाईन व फिटींग्ज | ड्रिपर्स | रेनपोर्ट स्प्रिंकलर | स्प्रे हेड व जेटस् | वॉल्व | फिल्टर्स | फिल्ट्रेशन संसाधन | फर्टिगेशन संसाधन | पीव्हीसी पाईप व फिटींग्ज | एचडीपीई पाईप्स व फिटींग्ज | क्विक कनेक्ट पाइप | ऑटोमेशन व कन्ट्रोलर्स

सावधान! नकल करके ड्रिप बनाने वाले एवं नकली ड्रिप कंपनियों और वितरकों से सतर्क रहें!